Topic - Nyaya (प्रत्यक्ष) (Perception)   B.A-I (Hon's) Paper. Ist

प्र० — न्याय दर्शन के अनुसार प्रत्यक्ष और इसके प्रकारों की व्याख्या करें।

उ० — न्याय दर्शन में ज्ञान के दो रूप की चर्चा की गई है- प्रमा और अप्रमा। प्रमा ही ज्ञान का वास्तविक स्वरूप है। प्रमा की प्राप्ति के लिए जितने साधन बताये गये हैं, उन्हें ही प्रमाण कहते हैं। न्याय दर्शन के अनुसार ज्ञान प्राप्ति के चार साधनों (प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द एवं उपमान) के द्वारा वास्तविक ज्ञान अथवा 'प्रमा' की प्राप्ति हो सकती है। अर्थात स्पष्ट है कि न्याय दर्शन के अनुसार ज्ञान-प्राप्ति के चार साधन हैं, जिसमें 'प्रत्यक्ष' भी एक है। यहाँ प्रत्यक्ष को 'प्रमाण' का पहला भेद बतलाया गया है।

'प्रत्यक्ष' शब्द की उत्पत्ति प्रति + अक्ष से हुई है। प्रति का अर्थ होता है- सामने, और अक्ष का अर्थ होता है- 'आँख'। अर्थात प्रत्यक्ष का अर्थ होता है- 'जो आँख के सामने हो।' लेकिन यह प्रत्यक्ष का संकीर्ण अर्थ है। लेकिन न्याय दर्शन में प्रत्यक्ष शब्द का प्रयोग व्यापक अर्थ में किया गया है। यहाँ प्रत्यक्ष का अर्थ है- पाँचों ज्ञानेन्द्रियों के द्वारा ज्ञान प्राप्त करना।

न्याय-दर्शन में प्रत्यक्ष की परिभाषा देते हुए कहा गया है कि, "इन्द्रियार्थ सन्निकर्षजन्यज्ञानं प्रत्यक्षम्" अर्थात इन्द्रिय और वस्तु के संयोग से जिस ज्ञान की उत्पत्ति होती है, उसे प्रत्यक्ष ज्ञान कहते हैं। प्रत्यक्ष ज्ञान में तीन तत्वों का हाथ होता है-

(i) इन्द्रिय (ii) विषय (iii) सन्निकर्ष

प्रत्येक मनुष्य के पास पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ होती हैं- आँख, कान, नाक, जीभ और त्वचा। मन भी एक इन्द्रिय है, जो आन्तरिक इन्द्रिय कहलाती है। बाह्य पदार्थों का ज्ञान बाह्य इन्द्रियों के द्वारा होता है तथा आन्तरिक इन्द्रिय के द्वारा सुख-दुःख इत्यादि का ज्ञान प्राप्त होता है। लेकिन सिर्फ इन्द्रियों के रहने मात्र से ही ज्ञान की प्राप्ति संभव नहीं है, अर्थात इन्द्रियों से भिन्न 'विषय' का रहना भी आवश्यक है। क्योंकि विषय के अभाव में इन्द्रियाँ किसका ज्ञान प्राप्त करेंगी? इन्द्रियों और वस्तु के अतिरिक्त दोनों के बीच सन्निकर्ष का होना भी आवश्यक है। इन्द्रियों का जब वस्तुओं के साथ संयोग होता है तो उस समय जिस ज्ञान की

Scanned with CamScanner

उत्पत्ति होती है, उसे प्रत्यक्ष ज्ञान कहते हैं। अतः स्पष्ट है, कि किसी भी ज्ञान की प्राप्ति में इन्द्रिय, विषय तथा सन्निकर्ष तीनों का होना आवश्यक है।

प्रत्यक्ष ज्ञान साक्षात् ज्ञान कहलाता क्योंकि जो ज्ञान साक्षात् रूप से बिना किसी माध्यम से होता है, उसे प्रत्यक्ष ज्ञान कहते हैं। अर्थात् प्रत्यक्ष में विषयों का साक्षात्कार हो जाता है।

प्रत्यक्ष ज्ञान यथार्थ होता है, और इसमें शंका की गुंजाइश नहीं होती है। अर्थात् यह सन्देह रहित और निश्चित ज्ञान होता है। इसलिए कहा गया है, कि "प्रत्यक्षं हि प्रमाणम्"।

प्रत्यक्ष ज्ञान को अन्य प्रमाणों का प्रमाण कहा जाता है, क्योंकि सभी ज्ञान अनुमान, शब्द, उपमान, अर्थापत्ति, अनुपलब्धि इत्यादि सभी किसी न किसी रूप में प्रत्यक्ष ज्ञान पर आश्रित है। इसलिए अन्य प्रमाणों को सापेक्ष माना जाता है, जबकि प्रत्यक्ष को स्वतंत्र और निरपेक्ष प्रमाण कहा जाता है।

सर्वप्रथम प्रत्यक्ष का विभाजन दो वर्गों में किया गया है — (i) लौकिक प्रत्यक्ष (~~[illegible]~~)

(ii) अलौकिक प्रत्यक्ष (~~[illegible]~~)

जब इन्द्रियों का वस्तुओं के साथ साधारण ढंग से सम्पर्क होता है, तो उसे लौकिक प्रत्यक्ष कहते हैं। जैसे आँख से जब गुलाब के फूल का सम्पर्क होता है, तो हमें प्रत्यक्ष ज्ञान होता है कि यह फूल लाल है, उजला है या पीला है। न्याय दर्शन के अनुसार लौकिक प्रत्यक्ष के दो भेद हैं — (A) बाह्य प्रत्यक्ष

(B) मानस प्रत्यक्ष

(A) बाह्य प्रत्यक्ष (External Perception) —

जब पाँचों ज्ञानेन्द्रियों का वस्तु के साथ सम्पर्क होने के बाद जो प्रत्यक्ष ज्ञान होता है, उसे बाह्य प्रत्यक्ष कहते हैं। बाह्य लौकिक प्रत्यक्ष के पाँच भेद हैं —

(i) चाक्षुष प्रत्यक्ष :— आँख से देखकर हमें ज्ञान होता है, कि यह गुलाब का फूल लाल है, इसे visual perception कहते हैं।

(ii) श्रावण प्रत्यक्ष :— कान से सुनकर हमें यह ज्ञान होता है, कि कोयल की आवाज मीठी है, इसे

Auditory Perception कहते हैं।

(iii) घ्राणज प्रत्यक्ष :- नाक से सूँघकर हमें ज्ञान प्राप्त होता है, कि गुलाब के फूल में खुशबू है इसे हम olfa-ctory Perception कहते हैं।

(iv) रासन प्रत्यक्ष :- जीभ से चखकर हमें यह ज्ञान होता है कि नींबू का रस खट्टा होता है, इसे हम Taste perception कहते हैं।

(v) त्वाचिक प्रत्यक्ष :- त्वचा से छूने के बाद हमें ज्ञान प्राप्त होता है, कि लोहा कड़ा होता है। इस तरह के प्रत्यक्ष को Tactual perception कहते हैं।

चाक्षुष, घ्राणज, श्रौत, स्पर्शन और रासन प्रत्यक्ष से क्रमशः रूप, गन्ध, ध्वनि, स्पर्श और रस का ज्ञान होता है।

(B) मानस प्रत्यक्ष :- मन के द्वारा जो प्रत्यक्ष ज्ञान होता है, उसे मानस प्रत्यक्ष कहते हैं। इसके द्वारा आन्तरिक अवस्था का प्रत्यक्ष होता है।

एक दूसरे दृष्टिकोण से लौकिक प्रत्यक्ष को तीन वर्गों में बाँटा गया है — (A) निर्विकल्पक प्रत्यक्ष
(B) सविकल्पक प्रत्यक्ष
(C) प्रत्यभिज्ञा

(A) निर्विकल्पक प्रत्यक्ष — कभी-2 वस्तुओं का ऐसा प्रत्यक्ष होता है, कि हम उसे स्पष्टतः नहीं जान पाते हैं, उसका हमें सिर्फ आभास मिलता है; ऐसे प्रत्यक्ष को निर्विकल्पक प्रत्यक्ष कहते हैं। अर्थात इस प्रत्यक्ष में वस्तु का पूर्ण ज्ञान नहीं होता है। जैसे — निद्रा की अवस्था में जब कोई आवाज सुनाई पड़ती है, तो उस अवस्था में हम सिर्फ इतना जान पाते हैं कि कोई आवाज है, परन्तु किस चीज की है, कहाँ से आ रही है, इत्यादि का ज्ञान नहीं हो पाता। इस प्रकार के ज्ञान को निर्विकल्पक प्रत्यक्ष की संज्ञा देते हैं।

(B) सविकल्पक प्रत्यक्ष :- वस्तुओं के स्पष्ट प्रत्यक्ष को सविकल्पक प्रत्यक्ष कहते हैं, इस प्रकार के प्रत्यक्ष में वस्तु का स्पष्ट तथा पूर्ण ज्ञान की प्राप्ति होता है। जैसे- कलम देखते ही हम समझ जाते हैं, कि यह लिखने की चीज है। अर्थात् इसमें वस्तु और उसके गुणों का ज्ञान हो जाता है।

अतः निर्विकल्पक प्रत्यक्ष वाही

विकसित रूप सविकल्पक प्रत्यक्ष है। निर्विकल्पक में वस्तु के मात्र अस्तित्व का आभास होता है, परन्तु सविकल्पक प्रत्यक्ष में वस्तु के अस्तित्व के अतिरिक्त उसके गुणों का भी ज्ञान हो जाता है। निर्विकल्पक प्रत्यक्ष में सत्यता और असत्यता का प्रश्न नहीं उठता, जब कि सविकल्पक प्रत्यक्ष में सत्यता अथवा असत्यता का प्रश्न उठता है। निर्विकल्पक प्रत्यक्ष और सविकल्पक प्रत्यक्ष के बीच वही अन्तर है जो संवेदना और प्रत्यक्षीकरण के बीच है। इन विभिन्नताओं के बावजूद भी यह कहा जा सकता है, कि निर्विकल्पक प्रत्यक्ष सविकल्पक प्रत्यक्ष का आधार है।

(C) प्रत्यभिज्ञा :- कुछ विद्वानों ने प्रत्यभिज्ञा को सविकल्पक प्रत्यक्ष का एक विशेष रूप कहा है। प्रत्यभिज्ञा का अर्थ होता है - 'पहचानना'। पूर्वानुभूति के आधार पर किसी व्यक्ति या वस्तु को पहचान लेना ही प्रत्यभिज्ञा कहलाता है। जैसे - किसी व्यक्ति को देखकर जब हम कह बैठते हैं, कि यह अमुक आदमी है, जिसको हमने अमुक समय में अमुक स्थान पर देखा था, तो इसे प्रत्यभिज्ञा कहेंगे।

(2) अलौकिक प्रत्यक्ष :-

जब इन्द्रियों का वस्तु के साथ असाधारण ढंग से सम्पर्क होता है, तो उसे अलौकिक प्रत्यक्ष कहते हैं। अलौकिक प्रत्यक्ष के तीन प्रकार होते हैं -

(i) सामान्य लक्षण प्रत्यक्ष

(ii) ज्ञान लक्षण प्रत्यक्ष

(iii) योगज

(1) सामान्य लक्षण प्रत्यक्ष - किसी व्यक्ति और वस्तु विशेष को देखकर उसकी जाति का प्रत्यक्ष ज्ञान होना ही सामान्य लक्षण प्रत्यक्ष कहलाता है। मनुष्य का जाति गुण 'मनुष्यत्व' है। किसी एक मनुष्य में 'मनुष्यत्व' गुण को देखकर हम सम्पूर्ण मानव जाति को देख लेते हैं, क्योंकि यह गुण सभी मानवों का सामान्य गुण है। इसे अलौकिक प्रत्यक्ष के वर्ग में इसलिए रखा जाता है, क्योंकि सम्पूर्ण मानव जाति का प्रत्यक्ष नहीं हो सकता है।

(ii) ज्ञान लक्षण प्रत्यक्ष :-

हमलोग मानते हैं कि सभी इन्द्रियों का अपना-2 विषय-वस्तु होता है। जैसे - आँख से रूप का ज्ञान होता है नाक से गंध का इत्यादि। लेकिन यदि एक इन्द्रिय के कार्य को दूसरी इन्द्रिय करने लगे तो उसे ज्ञान लक्षण प्रत्यक्ष कहलायेगा। अर्थात ज्ञान लक्षण प्रत्यक्ष अलौकिक प्रत्यक्ष का वह भेद है, जिसके द्वारा इन्द्रिय अपने-2 विषय से भिन्न विषय का जानकारी ग्रहण करती है। जैसे - रसगुल्ले को देखते ही मुँह में पानी आ जाता है। परन्तु रसगुल्ले के मीठापन का ज्ञान जीभ के द्वारा ही संभव है। लेकिन ज्ञान लक्षण प्रत्यक्ष में रसगुल्ले को देखकर ही स्वादिष्ट होने का ज्ञान प्राप्त हो जाता है। न्याय दर्शन में भ्रम की व्याख्या ज्ञान लक्षण प्रत्यक्ष के द्वारा की गयी है।

(iii) योगज :- हमलोग साधारणतः भूत और भविष्य की बातों को नहीं देख सकते हैं। दूर और सूक्ष्म वस्तुओं का साक्षात् अनुभव नहीं कर सकते क्योंकि इन्द्रियों की शक्ति सीमित है। परन्तु योगियों का अनुभव प्रत्यक्ष होता है। योगाभ्यास के कारण उनमें एक अपूर्व शक्ति आ जाती है, जिससे वे भूत और भविष्य की बातों को जानते हैं, सूक्ष्म से सूक्ष्म वस्तुओं को भी देख सकते हैं। चूँकि ऐसा प्रत्यक्ष योगियों को होता है, इसलिए इसको योगज कहा जाता है। यह अलौकिक प्रत्यक्ष है, क्योंकि यह साधारणतः संभव नहीं है।

ion :- उपर्युक्त विवेचना के आधार पर यह निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है, कि न्याय दर्शन में प्रत्यक्ष को एक स्वतंत्र प्रमाण के रूप में स्वीकार किया गया है, इसके द्वारा प्राप्त ज्ञान निश्चित, स्पष्ट, तथा संदेहरहित होता है। साथ यह प्रमाण अन्य प्रमाणों का आधार है। साथ ही सभी भारतीय दार्शनिकों ने प्रत्यक्ष को एक स्वतंत्र प्रमाण के रूप में स्वीकार किया है।

Scanned with CamScanner